१७

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः।इन्द्रः। त्रिष्टुप्, १५ द्विपदा त्रिष्टुप्

पिबा॒ सोम॑म॒भि यमु॑ग्र॒ तर्द॑ ऊ॒र्वं गव्यं॒ महि॑ गृणा॒न इ॑न्द्र।
वि यो धृ॑ष्णो॒ वधि॑षो वज्रहस्त॒ विश्वा॑ वृ॒त्रम॑मि॒त्रिया॒ शवो॑भिः॥ ६.०१७.०१

उग्र- उद्गूर्ण। इन्द्र- परमेश्वर। इदि परमैश्वर्ये। मेघानां पर्जन्यस्य वृष्टेः कारणभूता या ईशनशक्तिरस्ति सैवेन्द्र इत्याधिभौतिके। आध्यात्मिके तु इन्द्रियाणां विषयवासनानां या शक्तिश्चित्ते वशीकरोति तस्या देवतेन्द्रः। गृणानः- स्तुतः सन्। महि ऊर्वं गव्यम्- चिद्रश्मिसमूहम्। तर्दः- प्रकाशितवानसि। सोमम्- रसम्। अभि- आभिमुख्येन। पिब- अनुभव ॥१॥

स ईं॑ पाहि॒ य ऋ॑जी॒षी तरु॑त्रो॒ यः शिप्र॑वान्वृष॒भो यो म॑ती॒नाम्।
यो गो॑त्र॒भिद्व॑ज्र॒भृद्यो ह॑रि॒ष्ठाः स इ॑न्द्र चि॒त्राँ अ॒भि तृ॑न्धि॒ वाजा॑न्॥ ६.०१७.०२

यः। ऋजीषिः- आर्जवसम्पन्नः। तरुत्रः- तारकः। यः। शिप्रवान्- शोभननासिकोपलक्षितप्राणसम्पन्नः। यः। मतीनाम्- शुद्धमनननानाम्। वृषभः- वर्षकः। यः। गोत्रभित्- गिर्युपलक्षितजडभेदकः। वज्रभृत्- वज्रपाणिः। हरिष्ठाः- प्राणाश्वस्थः। स त्वम्। ईम्- एतं रसम्। पाहि- अनुभव। इन्द्र- ईशनाधिदैवत। वाजान्- अन्नानि। अभि- आभिमुख्येन। तृन्धि- प्रकाशय ॥२॥

ए॒वा पा॑हि प्र॒त्नथा॒ मन्द॑तु त्वा श्रु॒धि ब्रह्म॑ वावृ॒धस्वो॒त गी॒र्भिः।
आ॒विः सूर्यं॑ कृणु॒हि पी॑पि॒हीषो॑ ज॒हि शत्रूँ॑र॒भि गा इ॑न्द्र तृन्धि॥ ६.०१७.०३

एव- इत्थम्। प्रत्नथा- पुराणमार्गेण। पाहि- रसमनुभव। त्वा- त्वाम्। मन्दतु- आनन्दयतु। ब्रह्म- मन्त्रम्। श्रुधि- शृणु। उत- अपि च। गीर्भिः- वाग्भिः। वावृधस्व- वर्धस्व। सूर्यं- सवितारमात्मानमित्यध्यात्मिके। आविः कृणुहि- प्रकटय। इषः- सदिच्छाः। पीपिहि- प्यायय। शत्रून्- रिपून्। जहि- नाशय। गाः- धेनूपलक्षितचिद्रश्मीन्। इन्द्र। अभि तृन्धि- प्रकाशय ॥३॥

Dr. Rangaji

ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम्।

महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हृषन्त प्रसाहम्॥ ६.०१७.०४

त इमे। पीताः- अनुभूताः। मदाः- हर्षकरा रसाः। स्वधावः- आत्मवन्। इन्द्र। त्वा- त्वाम्। द्युमन्तम्- दीप्तिमन्तम्। बृहत्- अत्यन्तम्। उक्षयन्त- सेचयन्तु। महाम्- महान्तम्। अनूनम्- अन्यूनम्। तवसम्- बलिनम्। विभूतिम्- विभुम्। प्रसाहम्- शत्रवभिभावुकम्। मत्सरासः- रसाः। जर्हृषन्त- हर्षयन्ति ॥४ ॥

येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत्।

महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्परि स्वात्॥ ६.०१७.०५

येभिः- यैर्हर्षकरैः रसैः। मन्दसानः- हृष्टः। सूर्यं- सवितारमात्मानम्। उषसम्- प्रभातीं विद्याम्। अवासयः- न्यवासयः। दृळ्हानि- दृढानि बन्धनानि। अप दर्द्रत्- अदारयः। इन्द्र। गाः- चिद्रश्मीन्। परि- परितः। सन्तम्- भवन्तम्। अच्युतम्- च्युतिरहितम्। महाम्- बृहन्तम्। अद्रिम्- गिरिमेघोपलक्षितजडम्। स्वात्- स्वकीयात्। सदसः- स्थानात्। परि नुत्थाः- अनुदः ॥५ ॥

तव क्रत्वा तव तद्दंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि दीधः।

और्णोर्दुर उस्रियाभ्यो वि दृळ्होदूर्वाद्गा असृजो अङ्गिरस्वान्॥ ६.०१७.०६

तव- ते। क्रत्वा- प्रज्ञया। तव- ते। दंसनाभिः- दर्शनैः। आमासु- अपक्वासु। पक्वम्। शच्या- प्रज्ञया। नि दीधः- धारयसि। दृळ्हा- दृढानि। दुरः- द्वाराणि। उस्रियाभ्यः- धेनुभ्यश्चिद्रश्मिभ्यः। वि- विशेषेण। और्णोत्- उद्घाटितवान्। अङ्गिरस्वान्- उपासकमन्त्रबलयुक्तः। ऊर्वात्- समूहात्। गाः- धेनूश्चिद्रश्मीन्। असृजः ॥६ ॥

पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः।

अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य॥ ६.०१७.०७

Dr Ranganji

महि- महता। दंसा- दर्शनेन। उर्वीं- विस्तृताम्। क्षाम्- भूमिम्। वि- विशेषेण। पप्राथ- पूरितवान्। ऋष्वः- महात्मा सन्। इन्द्र। बृहत्- महत्। द्याम्- नभः। स्तभायः- स्तम्भितवान्। प्रत्ने- पुराणे। यह्वी- महत्यौ। ऋतस्य- प्रकृतिनियत्याः। मातरा- निर्मात्र्यौ। देवपुत्रे- दिव्ये। रोदसी- द्यावापृथिव्यौ। अधारयः ॥७ ॥

अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भराय।
अदेवो यदभ्यौहिष्ट देवान्स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र॥ ६.०१७.०८

अध- अथ। इन्द्र। त्वा- त्वाम्। पुरः- प्रत्यक्षतः। विश्वे- सर्वे। देवाः। एकम्। तवसम्- बलिनम्। भराय- निर्वाहाय। दधिरे- धृतवन्तः। यत्- यदा। अदेवः- अन्धकारभूतो वृत्रः। देवान्। अभ्यौहिष्ट- अभिगतवान्। स्वर्षाता- युद्धे। इन्द्रम्। अत्र। वृणते- देवा वरणं कुर्वन्ति ॥८ ॥

अध द्यौश्चित्ते अप सा नु वज्राद्द्वितानमद्भियसा स्वस्य मन्योः।
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद्विश्वायुः शयथे जघान॥ ६.०१७.०९

अध- अथ। सा। द्यौः। चित्- अपि। ते- तव। स्वस्य- स्वकीयस्य। मन्योः- मननस्य। द्विता- द्विधाभूतात्। वज्रात्। भियसा- भीत्या। अनमत्- ववन्दे। इन्द्रः। अभ्योगसानम्- अभिगन्तारम्। अहिम्- वृत्रं मूलशक्तिधाराणामावारकम्। विश्वायुः- सर्वनरहितः सन्। शयथे- मरणाय। नि जघान- हिंसितवान् ॥९ ॥

अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम्।
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन्॥ ६.०१७.१०

अध- अथ। उग्र- उद्गूर्ण। येन वज्रेण। ऋजीषिन्- आर्जवसम्पन्न। निकामम्- आत्मजयविश्वासरहितम्। अरमणसम्- अभिगन्तृमनसम्। नवन्तम्- शब्दं कुर्वाणम्। अहिम्- वृत्रम्। सम्- सम्यक्। पिणक्- पिष्टवानसि। तत्। महः- महत्। सहस्रभृष्टिम्- अनन्तधारम्।

Dr. Rangaji

शताश्रिम्- शतपर्वाणम्। वज्रम्। त्वष्टा- तनूकरणदेवता सूर्यः। ते- तुभ्यम्। ववृतत्- न्यवर्तयत्॥१०॥

वर्धान्यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषाँ इन्द्र तुभ्यम्।
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन्वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै॥ ६.०१७.११

विश्वे- सर्वे। मरुतः- प्राणविशेषाः। सजोषाः- सहृदयाः। यम्। वर्धान्- अवर्धयन्। इन्द्र। अस्मै- एतस्मै। तुभ्यम्- ते। वृत्रहणम्- आवरणनाशकम्। मदिरम्- आनन्दकरम्। अंशुम्- रसम्। त्रीणि सरांसि- त्रिषु सरोवरेषु भूर्भुवःसुवरादिषु। धावन्- उपकल्पयन्। शतं महिषान्- प्रभूतानि महान्ति चित्तभावनानि। विष्णुः- स्वरश्मिना व्याप्तो धर्मभूतज्ञानेन वा। पूषा- पोषकः सूर्य आत्मेत्याध्यात्मिके। पचत्- पक्वमकरोत्॥११॥

आ क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम्।
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रम्॥ ६.०१७.१२

नदीनां क्षोदः- जीवोदकम्। महि- महत्। आ वृतम्- आवरणेन बद्धम्। परिष्ठितम्- स्थगितम्। असृजः- बहिर्निःसारितवान्। अपामूर्मिं- जीवोदकतरङ्गमुद्घाटितवान्। इन्द्र। तासाम्। पन्थाम्- मार्गान्। प्रवतः- प्रवणानकरोः। अपसः- जीवोदकानि। समुद्रम्- अर्णवं हृदयसमुद्रमुद्दिश्य। नीचीः- प्रवणाभिमुखीः। प्र- प्रकर्षेण। अर्दयः- अगमयः॥१२॥

एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं सहोदाम्।
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्॥ ६.०१७.१३

एव- एवम्। ता- तानि। विश्वा- सर्वाणि। चकृवांसम्- कुर्वन्तम्। महाम्- महान्तम्। उग्रम्- उद्गूर्णम्। अजुर्यं- जरारहितम्। सहोदाम्- शक्तिदम्। सुवीरम्। स्वायुधम्- शोभनप्रहरणम्। सुवज्रम्- वज्रपाणिम्। इन्द्रमभिलक्ष्य। नव्यम्- अभिनवम्। ब्रह्म- मन्त्रम्। अवसे- रक्षायै। आववृत्यात्- आवर्तयतु॥१३॥

Dr. Rangan

स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान्।

भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन्दिवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र॥ ६.०१७.१४

इन्द्र। सः- असौ त्वम्। द्युमतः- द्युतिमतः। विप्रान्- मेधाविनः। नः- अस्मान्। वाजाय- बलाय। श्रवसे- अतीन्द्रियश्रवणोपलक्षितदिव्यानुभूतये। इषे- सदेषणायै। राये- दानयोग्यसम्पदे। च। धेहि- धारय। इन्द्र। भरद्वाजे- दत्तहविष्के स्तुवति। सूरीन्- विदुषः। नः- अस्मान्। नृवतः- मनुष्यवतः। कुरु। नः- अस्मान्। पार्ये दिवि- श्रेष्ठे ज्योतिषि। एधि ॥१४॥

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ ६.०१७.१५

अया- अनया। देवहितम्- देवक्षेमकरम्। वाजम्- बलम्। सनेम- सम्भजेम। शतहिमाः- शतायुषः। सुवीराः। मदेम- हृष्याम ॥१५॥

Dr. Ranganji